वंदे मातरम्
राष्ट्र सेविका समिति
:: प्रधान कार्यालय ::
देवी अहल्या मंदिर, धंतोली, नागपूर - 440012
दूरभाष : 0712-2442097 फॅक्स : 0712-2423852

वार्ता

वर्ष : 20 अंक : 53 युगाब्द 5119 दिनांक : 22.08.2017

तृतीय
प्रमुख संचालिका वं. उषाताई जी को विनम्र श्रद्धांजली

श्रद्धानत् सेविकाएं

"श्रद्धांजली गीत"

जन हृदय वात्सल्य मूर्ति,
कर्मयोगिनी लो बिदाई,
हम कभी बुझने न देंगे,
ज्योति जो तुमने जलाई ॥ 1 ॥

सौम्य स्नेहिल सरल सुंदर,
अगम सा व्यक्तित्व न्यारा,
ध्येय पथ पर अडिग रहकर,
कष्टमय जीवन तुम्हारा,
कंटकों के मार्ग पर चल,
राह जो हमको दिखाई ॥ 2 ॥

राष्ट्र का गुणगान करने,
सप्त स्वर बहते रहे हैं,
हृदय के ये भाव कोमल,
प्रेरणा देते रहे हैं,
थम गये हैं स्वर मधुरमय,
शेष है अब स्मृति तुम्हारी॥ 3 ॥

राम की आराधना में,
ग्रंथ मानस छबी बिठाई,
प्रहर रात्रि में अखण्डित,
रामगाथा नित्य गाई,
राम का ही स्मरण करते,
शांत मन से ली बिदाई॥ 4 ॥

गीत ही है पुष्प कर में ,
राष्ट्रभक्ति भाव मन में,
दे रही श्रद्धांजली सब,
सेविकाएं गीत गा के,
हम कभी बुझने न देंगे,
ज्योति जो तुमने जलाई ॥ 5 ॥

स्व. वं. उषाताई जी को
श्रद्धांजली

मा. भैयाजी जोशी द्वारा अंतिम दर्शन

पू. मोहन भागवत जी द्वारा श्रद्धासुमन समर्पित

प्रमुख संचालिका मा. शांता आक्का जी द्वारा प्रमुख कार्यवाहिका मा. सीताजी, मा. प्रमिलाताई मेढ़े जी एवं मा. चित्राताई द्वारा श्रद्धांजली

अहिल्या मंदिर से अंतिम यात्रा

अहिल्या मंदिर में स्व. उषाताई जी को अंतिम प्रणाम

अहिल्या मंदिर में स्व. उषाताई जी को अंतिम प्रणाम

स्व. वं. उषाताई चाटी जी : जीवन परिचय

राष्ट्र सेविका समिति की तृतीय प्रमुख संचालिका वं. उषाताई चाटी का निधन यह राष्ट्र सेविका समिति की अपूर्णीय क्षति है। राष्ट्रकार्यार्थ अपने जीवन का स्वाहाकार करने वाला एक व्यक्तित्व हमारे बीच नहीं रहा। मंदिर के नन्दादीप की ज्योति जिस प्रकार धीरे-धीरे शांत होते जाती है वैसे ही वं. उषाताई जी की जीवन ज्योति शांत हो गई। वे बहुत दिनों से अस्वस्थ चल रही थी परन्तु अहिल्या मंदिर परिसर में उनकी उपस्थिति ही हम सबके लिये प्रेरणादायी थी।

वं. उषाताई मूलतः भण्डारा निवासी थी। सब पर शुद्ध सात्विक प्रेम करने वाली वं. उषाताई चाटी फणसे कुल की कन्या थी। राष्ट्र सेविका समिति की तृतीय प्रमुख संचालिका थी। आपका जन्म 31 अगस्त 1927 भाद्रपद शुद्ध चतुर्थी अर्थात गणेश चतुर्थी के दिन हुआ। बुद्धिदाता श्री गणेश गणों का नायकत्व करने वाले गणपति का यह जन्मदिन और इसी अवसर पर आपका जन्म होना यह शायद विधि लिखित संयोग ही कहा जा सकता है। उषाताई जी की पढ़ाई भण्डारा के मनरो हाईस्कूल में हुई। वं. मौसीजी के साथ-साथ जिन्होंने भण्डारा में समिति शाखा प्रारंभ की थी। उस नानी कोलते की शाखा से ही वं. उषाताई जी का समिति प्रवास प्रारंभ हुआ। नानीजी के समर्पण भाव तथा निरपेक्षता का प्रभाव उषाताई पर पड़ा।

1948 में विवाह के पश्चात उनका परिवार नागपुर में स्थानान्तरित हुआ। उनके पति श्री गुणवन्त चाटी बाबा नाम से जाने जाते थे। आपने नागपुर में विवाह के बाद ''हिन्दुमुलींची शाळा'' इस विद्यालय में अध्यापन कार्य प्रारंभ किया। अल्पावधि में ही छात्राओं के साथ आपके आत्मियतापूर्ण व्यवहार से उषाताई विद्यार्थीप्रिय शिक्षिका होकर छात्राओं का आधार केन्द्र बन गई। परिवार में सबसे बड़ी बहू होने के नाते आपने सास-ससुर तीन देवर, ननद इन सबका स्नेह, अपने स्नेहिल व्यवहार से संपादित किया। श्री बाबा चाटी संघ के निष्ठावान स्वयंसेवक थे। घोष प्रमुख के नाते वे घोष में नये-नये प्रयोग करते रहते थे। साथ ही अनेक लोगों से उनका संपर्क बना रहता था।

अध्यापन का कार्य करते-करते वं. उषाताई ने भूगोल एवं मराठी इन विषयों के माध्यम से अपनी छात्राओं को सुसंस्कृत बनाने की दृष्टि से संस्कार किये। छात्राओं के विकास के हेतु से स्थापित 'वाग्मिता' विकास समिति की निरंतर 30 साल वह अध्यक्षा रह चुकी थी। यहां भी वह संस्कारक्षम कार्यक्रमों का आयोजन करती रही। सेवानिवृत्त होने के इतने वर्षों के पश्चात भी आपकी अनेक छात्राएं और सहयोगी अध्यापिकाएं आज भी आपको आदरपूर्वक याद करती रहती हैं।

वं. उषाताई को मधुर और सुरीली आवाज की ईश्वरीय देन प्राप्त थी। नागपुर में आने के बाद नागपुर आकाशवाणी पर संगीत के कार्यक्रमों में उनका सहभाग रहता था, जिसके लिए निरंतर अभ्यास की आवश्यकता थी। परन्तु समिति के कार्य से उन्हें समय नहीं मिलता था, वहां का समय शाखा के समय से मेल नहीं खाता था, परिणाम स्वरूप उन्होंने संगीत आराधना छोड़ दी। साथ-साथ आकाशवाणी कार्यक्रम भी बंद किये। समिति कार्य को प्राथमिकता देकर प्रसिद्धि से नाता छोड़कर हम सबके सामने एक आदर्श हमेशा के लिए रखा।

प्रथम आपातकाल के समय श्री बाबाजी ने संघ द्वारा आयोजित सत्याग्रह में भाग लिया। ऐसी कठिन परिस्थिति में परिवार का सभी प्रकार का दायित्व वं. उषाताई ने समर्थता से निभाया। श्री बाबाजी जैसे समर्पित कार्यकर्ता की पत्नी की भूमिका उन्होंने अच्छी तरह से निभाई। समिति का दायित्व, समिति कार्य क्रमशः दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था। नागपूर नगर कार्यवाहिका, विदर्भ कार्यवाहिका का दायित्व निभाते हुए 1970 में उन्हें अखिल भारतीय गीत प्रमुख का दायित्व सौंपा गया। 1977 से उत्तरप्रदेश का पालकत्व उनके ऊपर सौंपा गया। घर का तथा समिति दोनों का दायित्व वं. उषाताईजी ने एक साथ इतनी कुशलता से निभाये कि दोनों एक दूसरे के पूरक बनकर रहे। समिति का कार्य करते समय वह अपने परिवार से भी उसी तरह जुड़ी रही। मातृवत्सलता के कारण उन्हें परिवार में (बड़ी चाची) ताई जी का सम्मान प्राप्त है, महत्व के विषयों पर उनकी राय और मार्गदर्शन नित्य लिया जाता था। पूर्व में कार दुर्घटना में गंभीर बीमारी के समय उनके परिवार के सदस्य भतीजे, बहुएं, पोते-पोतियां उनकी सेवा के लिए उपस्थित रहे थे।

जून 1975 से कुछ दिन के लिए वं. उषाताई आपातकाल में सत्याग्रह कर के जेल गई। वहां की अन्य बंदी महिलाओं के साथ वात्सल्यपूर्ण व्यवहार से उन्होंने उनको प्रेरणा दी, उनमें धीरज बंधाया और कष्ट सहने की मानसिकता निर्माण की थी।

1982 में अचानक इस शांत जीवन में तूफान सा आ गया। श्री बाबाजी का हृदय विकार के झटके से कुछ ही क्षणों में अचानक निधन हो गया। संपूर्ण चाटी परिवार शोक सागर में डूब गया। ऐसे वज्राघात समान दुःख के समय भी उषाताईजी का विवेक संतुलन और संयम कायम था। अपने से भी अपनी वृद्ध सास का उन्हें ज्यादा ध्यान रहता था और इसलिए कोई सांत्वना के लिए आता था तो उषाताई जी उन्हें बताती थी कि आप पहले जाकर ताईजी से मिलें। ताई जी (सास) थोड़ी तेज स्वभाव की थी, परन्तु उषाताई जी के स्वभाव ने उन्हें जीत लिया था।

धीरे-धीरे अपना संपूर्ण समय समिति के लिए देने के लिए, पूर्णतः समर्पिता वृत्ति से काम करने के लिए समिति कार्यालय अहिल्या मंदिर में रहने आ गईं।

प्रमुख संचालिका के नाते वं. उषाताई जी को कभी-कभी समस्याग्रस्त प्रांतों का प्रवास करना पड़ता था। बड़े हर्षोल्लास से वह यह प्रवास करती थी। पूर्वनियोजित कार्यक्रमों में उपस्थित रहती थीं। कभी-कभी स्थानिक कार्यकर्ता सेविकाएं आपकी सुरक्षा के बारे में चिंतित रहती थी। सैनिकी ट्रक या पुलिस जीप में सवार होकर यात्रा करनी पड़ती थी। लेकिन उषाताई हंसते-हंसते यह सब निभा लेती थी। ना स्वयं

चिंतित रहती थी, ना दूसरों को रहने देती थी।

वं. उषाताई जी का नेतृत्व, संगठन के लिए आवश्यक ऐसा मातृभाव देखकर अपनी बढ़ती आयु के बारे में सोचकर व ताईजी आपटे ने 1984 में आपके हाथों में सह प्रमुख संचालिका का पदभार सौंपा था जिससे आपका प्रवास का क्षेत्र और अधिक विस्तारित हुआ। 1991 में विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रिय विश्वस्त के नाते उनका नाम स्वीकृत हुआ, उनकी बैठकों में आपको जाना पड़ता था।

दिनांक 9 मार्च 1994 को वं. ताईजी आपटे का आकस्मिक निधन हुआ। उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार वं. उषाताई को प्रमुख संचालिका का दायित्व सौंपा गया, वह दायित्व को समर्थता से निभाती आयी थी। पिछले कई वर्षों से घुटनों के दर्द से पीड़ित होने पर भी किसी कार्यक्रम पर अपने बीमारी का प्रभाव नहीं पड़ने देती थी, सभी कार्यक्रम पूर्ववत चालू थे। अपनी सहयोगी कार्यकर्ताओं पर उनका अटूट विश्वास था। अतः आप उन पर सहजता से बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियां सौंप देती थी।

एक अखिल भारतीय स्त्री संगठन की प्रमुख होने का अहंभाव उनमे कतई नहीं दिखाई देता था। सामान्य सेविका की प्रशंसा आप खुले दिल से करती थी। वह अच्छा बौद्धिक हो, गीत हो या कला कौशलवाली बात हो। सेविकाओं के आग्रह पर वे उनकी मधुर आवाज में सहजता से गीत सुनाती थी। इस वर्ष की बैठक में 30 जुलाई को वं. मौसीजी के संकल्प दिवस पर 'हे राष्ट्रहित अर्पित सुमन' यह गीत सुमधुर आवाज में गाया।

आपके कार्य के गौरवस्वरूप आपको अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए जिसमें -

1. जोशी फाऊंडेंशन की ओर से दिया जाने वाला राष्ट्रीय एकात्मता पुरस्कार।
2. स्वामी विवेकानंद राष्ट्रीय शिक्षण संस्था, डोंबीवली के द्वारा दिया जाने वाला विवेकानंद पुरस्कार।
3. ओजस्विनी अलंकरण, भोपाल आपको प्राप्त हुए हैं।

इन सब पुरस्कारों में प्राप्त धनराशि आपने संघमित्रा सेवा प्रतिष्ठान को दान की है। आपके कार्यकाल में समिति द्वारा प्रेरित प्रतिष्ठानों की बैठकें लेना प्रारंभ हुआ। 1998 में पूना में, नागपूर में 2001-2001 में हुआ। विश्व समिति शिक्षा वर्ग का आयोजन हुआ। विविध प्रांतों में जनजातीय और समस्यापीड़ित बालिकाओं के लिए निःशुल्क छात्रावास शुरू हुए।

वर्तमान संघर्षमय काल में राष्ट्रव्यापी एवं विश्वव्यापी महिला संगठन का नेतृत्व सशक्तता से करना एक अग्निपरीक्षा के समान है परन्तु एक-एक कार्यकर्ता को जोड़कर रखने की कुशलता, उनकी मातृवत स्नेहमयी, शांत, स्निग्ध प्रकृति के कारण ही संभव हुआ। उसी के कारण गुरूतर दायित्व निभाने में सफल हुई।

अस्वस्थता की अवस्था में भी आप अभी संपन्न हुए विश्व समिति वर्ग में विदेश से आई सेविकाओं से मिलने गई थीं।

आज वं. उषाताई जी हमारे बीच नहीं है फिर भी उनका सात्विक स्नेहिल स्पर्श हम अपने अंदर अनुभव करते हैं। उनका यह मातृत्व का स्नेहिल भाव ही हमें सदैव प्रेरणा देता रहेगा।

:: अखिल भारतीय अर्द्धवार्षिक बैठक ::

अखिल भारतीय कार्यकारिणी एवं प्रतिनिधि मंडल की बैठक हेमलम्बी नाम संवत्सर में दिनांक 1 जुलाई से 3 जुलाई 2017 दोपहर तक वं. प्रमुख संचालिका मा. शान्ता आक्का जी के उपस्थिति में देवी अहिल्या मंदिर नागपुर में संपन्न हुई। वर्ग के आरंभ में इस वर्ष दिवंगत मान्यवर कार्यकताओं को भावभिनी श्रद्धांजली अर्पित की गई। इस बैठक में सभी प्रांतों से दायित्वयुक्त बहनें उपस्थित थीं। बैठक का प्रारंभ मां. सीताजी (प्रमुख कार्यवाहिका जी के वृत्त निवेदन से हुआ एवं समापन वं. प्रमुख संचालिका मा. शान्ता आक्का जी के मार्गदर्शक उद्बोधन के साथ हुआ) इस बैठक का बोधवाक्य था -

अधिकारं परित्यज्य कर्तव्यं कुरूते सदा।
कर्तव्यं सुसम्पन्ने, अधिकारं लभ्यते स्वतः ॥

वं. प्रमुख संचालिका मा. शान्ता आक्का जी के बौद्धिक के प्रमुख बिन्दु

3 जुलाई, आषाढ़ शुद्ध दशमीं वं. मौसीजी का जन्मदिन अर्थात हमारे लिये संकल्प लेने का दिन, उन्होंने मौसीजी का स्मरण करते हुए कहा कि समिति कार्य विस्तार के लिए हमें शक्कर के कणों जैसा बनना चाहिये। शक्कर के प्रत्येक कण में जैसी मिठास रहती है वैसे ही सभी सेविकाओं ने भी नित्य मीठा ही बोलना चाहिये। वं. मौसीजी कहती थीं अगर अपने अंदर आंतरिक आध्यात्मिक शक्ति है तो ही वाणी में मिठास संभव है। उनका एक प्रिय भजन था-

हरिनामाची गोड शर्करा आपण चाखावी,
आपण चाखुनी इतरानां ही मूठ मूठ वाटावी।

अर्थात हरिनाम की मिठास हम स्वयं चखें एवं मुट्ठी भर भर के यह आनंद दूसरों को भी बांटे, हरिनाम की मिठास अर्थात ज्ञान हम भरसक प्राप्त करें एवं विपुल मात्रा में लोगों को बांटें। ज्ञान यह अत्यंत अलौकिक वस्तु है, जो जितना बाटेंगे उतनाही बढ़ता है, परन्तु उसे प्राप्त करने के लिए परिश्रम की प्रेमभक्ति, निष्ठा की आवश्यकता रहती है। ज्ञान का कभी क्षय नहीं होता यह अक्षयपात्र है। द्रौपदी अपने अक्षयपात्र से हजारों को भोजन कराकर तृप्त करती थीं। हम भी ज्ञान रूपी अक्षयपात्र बनें। जो हमारे पास श्रेष्ठतम है उसे वितरित करें। इस बैठक का बोधवाक्य हमें यही सीख देता है ***''अधिकारं परित्यज्य कर्तव्यं कुरूते सदा।''*** हमें अपने अधिकार क्या है इसका विचार न करते हुए मेरा इस पद पर दायित्व क्या है, कर्तव्य क्या है, इसका विचार करें। कर्तव्य निष्ठापूर्वक करने से अक्षय शक्ति प्राप्त होती है। स्वयं वं. मौसीजी इसका श्रेष्ठतम उदाहरण है।

वे एक बार प्रवचन हेतु एक मंदिर में गई थीं परन्तु विधवा है इसलिये मंदिर के पूजारियों ने उन्हें व्यासपीठ पर बैठने नहीं दिया। वहां उपस्थित कार्यकर्ता बहनें नाराज हो गई, चिढ़ गई, परन्तु मौसीजी ने सबको शांत किया एवं वे सहजभाव से व्यासपीठ के बाजू में नीचे आसन बिछाकर समय पर प्रवचन करने बैठ गई। प्रवचन की धार एवं रामायण का तर्क शुद्ध मार्मिक विवेचन सुन वहां के पुजारी स्तब्ध रह गए। उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ, उन्होंने मौसीजी से अपने कृत्य पर क्षमा मांगी एवं उन्हें सम्मानपूर्वक व्यासपीठ पर बैठाया। उनकी आध्यात्मिक ऊर्जा का ही प्रभाव था जो वहां के लोगों के हृदय परिवर्तन के लिये कारण बना। प्रत्येक सेविका से यही अपेक्षा है कि अपमान के कटुविष को पचाने एवं ज्ञान का अक्षय भण्डार प्राप्त करने सदैव वं. मौसीजी का आदर्श सामने रखें।

अन्य संगठनों के साथ समिति का समन्वय

(1) परिवार में महिलाओं की स्थिति - एक अध्ययन...

सन् 2016 के महिला समन्वय बैठक में महिला समन्वय की ओर से भारत में महिलाओं की स्थिति विषय पर अध्ययन करने के लिए विविध संगठनों में काम करने की योजना बनी। ''परिवार में महिलाओं की स्थिति'' को अध्ययन करने के लिये समिति द्वारा दिल्ली एवं नागपुर में दो कार्यशालाएं संपन्न हुई। 23 प्रान्तों से 40 संयोजिकाओं ने प्रशिक्षण लेकर अध्ययन कार्य किया। सेविकाओं को अनेक प्रत्यक्ष अनुभव मिले हैं। बैठक का अनुभव कथन सत्र सभी बहनों को रोमांचित कर गया।

(2) ''महिला पूर्णकालिन कार्यकर्ता अभ्यासवर्ग''

गत 29 मार्च से 1 अप्रैल तक अखिल भारतीय बनवासी कल्याण आश्रम के केन्द्र जशपुर में महिला पूर्णकालिन कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग संपन्न हुआ। इस अभ्यास वर्ग में न्यूनतम दस वर्ष से कार्यरत विभाग स्तर से अधिक दायित्वयुक्त बहनें अपेक्षित थी। कुल 6 संगठनों से 114 संख्या थी। समिति से 33 प्रचारिकाएं अपेक्षित थी। 31 प्रचारिकाएं उपस्थित रही। इस वर्ग की मध्यवर्ती कल्पना थी ''सुशिलाः सुधीराः समर्थाः समेताः'' अपनी प्रार्थना की एक पंक्ति। प्रभात और सायं शाखाओं का दायित्व समिति सेविकाओं का था। अन्य संगठनों की कार्यकर्ता बहनों ने शाखा में आनन्द लिया।

(3) संघ विचारों से चलने वाली सामाजिक सांस्कृतिक समूह की बैठक प्रति दो वर्ष के पश्चात विशिष्ट विषय को लेकर होती है। इस वर्ष ''वैश्विकरण का सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव'' इस विषय पर हुआ। उदारीकरण, युवा पीढ़ी, मातृशक्ति, परिवार प्रसार माध्यम आदि विषयों पर प्रस्तुतिकरण एवं चर्चा हुई। करणीय कार्यसूचित किये गये। महिला संगठन के नाते समिति पर बड़ी जिम्मेदारी है। सामाजिक दायित्व को निभाने के लिये तैयार होते हुए आज अनेक शिक्षित महिलाएं समिति के साथ जुड़ना चाहती हैं, इस संदर्भ में समिति को विचार करना होगा। देश की परिस्थितियों के कारण, संवेदनाओं के कारण कुछ न कुछ सामाजिक कार्य से जुड़ने की युवती एवं महिलाओं की इच्छा रहती है। सामाजिक संगठन हेतु अनेक वर्षों से विविध संगठन प्रयासरत है, फिर भी समाज को दिशाविहिन करने वाली शक्तियों का प्रभाव भी बढ़ रहा है।

''आंदोलन करना यह लोकतंत्र में जायज है परन्तु आंदोलन के बहाने शासकीय संपत्ति को नुकसान पहुंचाना, सड़क पर दूध फेंकना, सब्जी बरबाद करना, बसें जला देना, यह अपनी संस्कृति नहीं है। नक्सलवाद, आतंकवाद, अलगाववाद से हमारा देश जूझ रहा है। सामान्य जनजीवन में अनेक समस्याएं उभरकर सामने आ रही है। छत्तीसगढ़ में नक्सलवादियों द्वारा सी.आर.पी.एफ. जवानों को मारना, अलग गोरखालैण्ड आंदोलन को दबाने के प्रयास में सामान्य नागरिकों के ऊपर दबाव लाना, काश्मीर में आतंकवाद एवं घुसपैठ के कारण निरंतर युद्ध सदृश परिस्थिति है, प्रतिदिन हमारे सैनिकों की मृत्यु हो रही है। अयुब पंडित को समुदाय ने पत्थरों से मारना, दिल दहलाने वाला है। केरल में देशभक्त नागरिकों की हत्याएं हमें परिस्थिति की गंभीरता को अवगत कराते हैं। इन परिस्थितियों के समस्याओं का समाधान एक ही है संगठिन शक्ति को सुदृढ़ बनाना। अपने संगठन का सामर्थ्य है पू. बालासाहब देवरस के शब्दों में ''देव दुर्लभ कार्यकर्तागण''

यह विचार बैठक में प्रमुख कार्यवाहिका मा. सीताजी ने अपने प्रतिनिधि सभा की प्रथम उद्घाटन उद्बोधन में प्रतिनिधियों के सामने रखे।

:: विश्वविभाग वर्ग वृत्त ::

भारत के बाहर विविध देशों में हिन्दु धर्म की रक्षा और विश्व शान्ति के लिये हिन्दु सेविका समिति संगठन कार्यरत है। इस संगठन के कार्यकताओं के सर्वांगीण विकास के लिये हर चार वर्ष में एक बार प्रशिक्षण वर्ग चलाया जाता है। इस वर्ष ऐसा ही एक वर्ग नागपुर में दिनांक 20 जुलाई से 5 अगस्त तक आयोजित किया गया था।

द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के लिये आस्ट्रेलिया, यू.एस.ए., केनिया और गयाना से 47 शिक्षार्थियों ने प्रशिक्षण लिया जिसमें सर्वाधिकारी के नाते मा. कीर्तिदा जी भट एवं मा. विदुला अम्बेकर जी रहे। इस वर्ग में 15 वर्ष से 70 वर्ष की सेविकाएं व्यवस्था, प्रशिक्षण आदि हेतु एक साथ रहे। वर्ग में पढ़ाई कर रहे विद्यार्थी, इंजीनियर, आई.टी.प्रोफेशनल लॉयर जैसे विविध क्षेत्रों से निपुण शिक्षार्थियों ने एक साथ प्रशिक्षण लिया।

कार्यकर्ता बहनों के मानसिक और बौद्धिक विकास के लिये विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। वर्ग से एक दिन पहले विश्व के विभिन्न देशों से आई सेविकाओं ने नागपुर के अनेक परिवारों में आतिथ्य का अनुभव लिया, जिसमें उन्हें भारतीय संकल्पना 'अतिथि देवो भव' की प्रत्यक्ष अनुभूति हुई। 20 जुलाई सायं 4 बजे आतिथ्य परिवारों के साथ इन सेविकाओं का वर्ग स्थान पर आगमन हुआ। सुप्रसिद्ध उद्योजिका पद्मश्री विजेत्री श्रीमती कल्पना सरोज की अध्यक्षता में उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ। जिसमें वं. प्रमुख संचालिका मा.शान्ता आक्का जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। मा. शान्ता आक्काजी ने प्रेरणादायी शब्दों में बताया कि हमें हमेशा अपना कर्तव्य करते रहना चाहिये, वही हमारा धर्म है अधर्म का कोई भी काम नहीं करना चाहिये। आगे उन्होंने बताया कि हम सबको अपना मातृधर्म, पितृधर्म, आचार्य धर्म और नागरिक धर्म अचुक निभाते रहना चाहिए।

स्व. वं. उषाताई जी विश्वविभाग वर्ग में

इस वर्ग का बोधवाक्य ''हिन्दु धर्म रक्षणं लोक मंगल वर्धनम्'' रहा। इस वर्ग में बाल सुभ्रमण्यम, डॉ. आरती जी, मा. सुचेता जी। साध्वी ब्रम्ह प्रकाशानन्दा जैसे मान्यवरों ने भगवत्गीता जैसे विषयों पर प्रेरणात्मक उद्बोधन दिया। विशेष अभ्यास के समय में स्वर सहित 'मेधा सुक्त' का अभ्यास करवाया गया। इस वर्ग में राष्ट्र सेविका समिति की तृतीय एवं चतुर्थ संचालिका जी मा. उषाताई एवं प्रमिला ताई जी का सान्निध्य सविकाओं को प्राप्त हुआ। मा. शान्ता आक्का जी (वं. प्रमुख संचालिका) मा. सीता गायत्री जी (प्रमुख कार्यवाहिका) का सान्निध्य सेविकाओं के लिये प्रेरणादायी रहा। विश्व विभाग में हिन्दु सेविका समिति का दायित्व निभाने वाले मा. अल्का ताई इनामदार एवं मा. भाग्यश्री साठे वर्ग में संपूर्ण समय उपस्थित रहकर प्रशिक्षार्थियों को मार्गदर्शन देती रहीं।

इस वर्ग में संघ-समिति के अनेक अधिकारियों ने सांप्रत विषयों पर विचार व्यक्त किये। विशेष रूप से पू. सरसंघचालक मोहनराव भागवत जी उपस्थित रहे।

राष्ट्र सेविका समिति नागपुर की सेविकाएं एवं वर्ग में आई हुई हिन्दु सेविका समिति की सेविकाओं का प्रभावी पथ संचलन दिनांक 29 जुलाई को संपन्न हुआ। इस संचलन में जुड़ी 125 सेविकाओं का नागपुर के नागरिकों ने सहर्ष स्वागत किया। दिनांक 30 जुलाई को शिक्षार्थियों के लिये सेवा प्रकल्प प्रदर्शन का आयोजन किया गया था, जिसमें देवी अहिल्या मंदिर, कैंसर हॉस्पिटल, ब्लड बैंक, अजंता सिलाई केन्द्र आदि सेवा प्रकल्प का सेविकाओं ने अवलोकन किया। रात्रि कार्यक्रमों में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिसमें पाऊल भजन भारतीय शास्त्रीय लोकनृत्य, मंगला गौरी खेल, भारतीय पारम्परिक खेल, ढोल-ताशा जैसे विविध कार्यक्रम हुए जिसके माध्यम से शिक्षार्थियों को भारतीय संस्कृति की झांकी दिखाई गई।

दिनांक 30 जुलाई शाम को ''मातृहस्तेन भोजनं'' कार्यक्रम में नागपुर के 32 परिवारों ने अत्यन्त स्नेह से शिक्षार्थियों को घर के भोजन का आस्वाद कराया।

हिन्दु स्वयं सेवक संघ एवं हिन्दु सेविका समिति के वर्गों का समापन समारोह दिनांक 4 अगस्त 2017 को रेशमबाग के व्यास सभागृह में सामूहिक रूप से संपन्न हुआ। इस वर्ग का समापन समारोह पू. सरसंघचालक एंव प्रमुख संचालिका जी के साथ मुख्य अतिथि श्री देव रॉय (आर्थिक नीति योग सदस्य) की उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस समारोह में 15 दिनों में वर्ग में लिया गया अभ्यास प्रात्यक्षिक द्वारा लिया गया। जिसमें सेविकाओं ने योग चाप, नियुद्ध सामूहिक संचलन एवं स्वयं सेवकों ने योगासन नियुद्ध और व्यायाम योग का प्रदर्शन किया। इस समारोह में 1000 से भी ज्यादा नागरिक उपस्थित रहे। इस समारोह में प्रमुख रूप से पू. सरसंघचालक जी का बौद्धिक

:: धार्मिक विभाग वृत्त ::

महाराष्ट्र प्रान्त -

महाराष्ट्र में धार्मिक विभाग के 4 उपभाग है -
(1) पौरोहित्य वर्ग (2) भजन (3) कीर्तन (4) प्रवचन।
पौरोहित्य का पाठ्यक्रम 3 वर्षों का है। इसकी परीक्षा भी ली जाती है। यह कार्य पुणे, ठाणे, नाशिक, औरंगाबाद, भिवड़ी एवं नागपुर में चलता है। पूरे महाराष्ट्र में 34 पौरोहित्य वर्ग चल रहे हैं, विद्यार्थियों की संख्या इस वर्ष 4210 है एवं शिक्षिकाएं 34 हैं। इस क्रम में आज तक 500 महिलापुरोहित तैयार हो चुकी है।

इस समय चारों उपविभागों का सम्मेलन 2 से 4 जून को नाशिक में हुआ। इसमें 115 भगिनियों की सहभागिता रही। इस सम्मेलन का उद्घाटन मां. सुशिलाताई महाजन (केन्द्रीय मार्गदर्शक समिति सदस्या) ने किया। इस सम्मेलन में दो विषयों पर चर्चा हुई - (1) महिलाओं का पौरोहित्य सहभाग उचित अथवा अनुचित ? आधुनिक काल में मंत्रों की आवश्यकता ''वेद और विज्ञान'' इस विषय पर व्याख्यान हुए।

ठाणे कार्यालय में धार्मिक विभाग की बैठक अखिल भारतीय कार्यवाहिका की उपस्थिति में संपन्न हुई जिसमें हर जिले में एक धार्मिक विभाग प्रमुख नियुक्त करने का सुझाव दिया गया।

हरियाणा धार्मिक विभाग -

हरियाणा के धार्मिक विभाग ने करनाल में कुटुम्ब प्रबोधन का कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मां. इन्द्रेशजी (अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य) ने बताया कि आज विश्व भारत की इस अद्वितीय व्यवस्था की ओर न केवल बड़े विश्वास से देख रहा है बल्कि उसे अपनाने की कोशिश भी कर रहा है। भारतीय संस्कृति के चिरंजीवी व अक्षुण्णता का कारण उसकी विशिष्ट व्यवस्था है। परिवार संस्कारों की निर्माण स्थली है, जहां पर जीवन मूल्यों की स्थापना होती है। वर्तमान में भारत में इस परिवार व्यवस्था में टुटन आ गई है। परिवारों में संस्कार निर्माण में कमी आ गई है। परिवार में सभी सदस्यों की ऐसी स्थिति हो गई है कि किसी को किसी के लिए समय नहीं है। ऐसे में समाज हित में सोचना और भी मुश्किल हो गया है। इसलिये आज की सबसे बड़ी आवश्यकता कुटुम्ब प्रबोधन की है। मा. इन्द्रेश जी ने टुटते परिवार बिखरते समाज व संस्कारों की कमी पर गहरी चिन्ता व्यक्त की और सभी से आव्हान किया कि पारिवारिक और सामाजिक रिश्ते ही हमारी पूंजी है, इसलिये इसे बचाए रखें। उन्होंने कहा कि वर्तमान में लोग बच्चों के लिये समय नहीं निकाल पा रहे हैं। उन्हें अपने परिवार के साथ समय बिताना चाहिए। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता उत्तर क्षेत्र कार्यवाहिका मा. चंद्रकान्ताजी ने की। इस कार्यक्रम में 540 बंधु भगिनियों की सहभागिता रही।

:: इस वर्ष के विशेष ::

(1) तमिलनाडू के 18 वर्षीय हित शाहरूख नामक युवक ने केवल 64 ग्राम वजन का कलाम सेट नाम का उपग्रह तैयार किया। नासा और आसडूडल लर्निंग द्वारा आयोजित क्यूब इन स्पेश स्पर्धा में वह सहभागी हुआ था। 21 जून को यह उपग्रह नासा द्वारा प्रक्षेपित किया गया। नासा ने पहली बार किसी भारतीय उपग्रह को प्रक्षेपित किया। हित को पुस्कार मिला परन्तु उसके माध्यम से भारतवर्ष भी पुरस्कृत हुआ।

(2) 21 जून भारत वर्ष की ओर से सारे विश्व को योग दिवस की देन है। अतः उस दिन को विशेष महत्व प्राप्त हुआ है क्योंकि यह अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष 192 देशों ने योग दिवस मनाया। यूनो भवन पर विशेष रोशनायी की गई थी। योगासन का एक चित्र भी उस रोशनाई से दिखाई दे रहा था। वास्तव में आध्यात्मिक योग ही विश्व को आतंकवाद से छुटकारा दिला सकता है।

(3) इस वर्ष कोंकण प्रांत की अपनी रत्नागिरि शाखा की सेविका मुग्धा ने दसवीं में 100 प्रतिशत अंक प्राप्त किये। उसकी विशेषता यह है कि वह दैनिक शाखा की नित्य सेविका है। प्रतिदिन शाखा मानो उसका व्रत ही है। उसी प्रकार भारतीय श्री विद्यानिकेतन विद्यालय का छात्र भी मेरिट में आया। विशेषता यह कि उसने किसी भी प्रकार की ट्यूशन नहीं लगाई थी। शालेय शिक्षिकाओं के प्रयास से ही यह संभव हुआ।

:: श्रद्धांजली ::

1. **मा. स्व. सुनिता जोशी,** एक निष्ठावान सेविका एवं मा. चित्राताई जी की माताजी थी, उन्होंने तेजस्विनी सेवा प्रतिष्ठान, बिलासपुर को अपना घर दान स्वरूप दिया।
2. **मा. विजयलक्ष्मी आक्का** - आंध्र की पूर्व प्रांत कार्यवाहिका पूरा परिवार संघ परिवार। समिति की निष्ठावान सेविका।
3. **मा. स्व. सुमनताई जोगळेकर** - आप कोंकण प्रांत की बौद्धिक प्रमुख थीं। मृदुभाषिक निष्ठावान सेविका।
4. **मा. स्व. कन्नकम्मा पिल्ले** - केरल की समिति के प्रति स्नेह एवं वात्सल्य रखने वाली। आपने संस्था के लिये भूमि दान दी।
5. **मा. स्व. सौभाग्यलक्ष्मी (इंदुताई) आगाषे** - जीजा माता स्मारक समिति की अध्यक्ष पुणे की निष्ठावान सेविका।
6. **मा. स्व. निलिमा कानिटकर** - पश्चिम महाराष्ट्र की सेवा प्रमुख। सबको अपनत्व से बांध लेने वाली कार्यप्रवण सेविका।
7. **मा. स्व. शकुन्तला कुण्टे** - वं. सरस्वति ताई सेवा प्रतिष्ठान तळेगांव की सचिव थी।
8. **मा. स्व. शोभाताई देशपाण्डे** - आप रानी लक्ष्मीबाई भजन मण्डल नागपुर की सचिव थी।
9. **स्व. श्री मामा देवस्थली** - मा. सुनन्दाताई देवस्थली के पति थे तथा वनवासी कल्याण आश्रम के निष्ठावान कार्यकर्ता थे।
10. **स्व. हेमेन्द्र कुमार डे** - दक्षिण आसाम की प्रचारिका सुपर्णा डे के पिताजी थे।
11. **स्व. श्री अनिल देवेजी** - केन्द्र मंत्री (भा.ज.पा.) दक्षिण आसाम प्रांत संघ चालक।
12. **श्रीमती सुमनताई सरनाईक** - मृदुभाषी, सरल स्वभाव की अनेक वर्षों तक अहिल्या मंदिर की अध्यक्षा रही।
13. **सीमा पर लड़ते-लड़ते शहीद हुए जवानों, पुलिस अधिकारियों को विनम्र श्रद्धांजली।**

:: स्व. वं. उषाताई जी के स्मरणीय चित्र ::

दिल्ली के विराट सम्मेलन को संबोधित करती हुई वं. उषाताई जी

नागपुर सम्मेलन में अतिथियों के साथ प्रदर्शनी का अवलोकन करती वं. उषाताई जी

ज्येष्ठ सेविकाओं के साथ रघुवीर कृपा बिलासपुर में वं. उषाताई जी

प्रिंटेड मेटर बुक-पोस्ट

नाम .....

पता .....

.....

.....

पिनकोड ..... मो. .....